बाइबल टीचर

वर्ष 21 | अक्टूबर 2024 | अंक 11

सम्पादकीय

विवाह सब में आदर की बात समझी जाए

बाइबल हमें बताती है कि आदम और हव्वा को परमेश्वर ने बनाया। और अदन की वाटिका में पहिला विवाह रचाया। बाइबल बताती है कि ''तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नीन्द में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। और आदम ने जब उसे देखा तो कहा, ''यह अब मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है। सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है। (उत्पत्ति 2:21-23)।

आज के इस युग में जब लोग जल्दबाज़ी में बिना सोचे समझे विवाह कर लेते है तब उन्हें उसके बाद कई बार पछताना पड़ता है। आज लोग विवाह को समझते नहीं हैं। विवाह एक सुंदर और पवित्र रिश्ता है। जिसमें हमें एक-दूसरे के प्रति समर्पण को समझना चाहिए। बाइबल कहती है, ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रिगमियों का न्याय करेगा (इब्रानियों 13:4)। विवाह करना इसलिए आदर की बात है क्योंकि आप किसी को जीवन भर के लिए अपना जीवन साथी बनाने जा रहे हैं। कई लोग विवाह को गंभीरता से नहीं लेते। कई लोग विवाह को ऐसे लेते हैं जैसे दो पक्षों में कोई बिजनेस डील हो रही है। कई लोग इतने लालची होते हैं कि वे विवाह की बात करते समय सिर्फ़ लेन-देन की बात करते हैं। यह सब संसार में हमें आम देखने को मिलता है। अपने इस व्यवहार के कारण कई विवाह टुट चुके हैं। कई तलाक आज इसलिये भी हो रहे हैं क्योंकि हमने अपने को ऐसे नहीं लिया जैसे परमेश्वर चाहता है।

परमेश्वर चाहता है कि विवाह पूरी उम्र तक हो, जब तक मौत एक साथी को जुदा न कर दे। बाइबल में लिखा है कि, ''तब फरीसी उसकी परीक्षा लेने लगे और कहने लगे

क्या हर एक कारण से अपनी-अपनी पत्नी को तलाक देना उचित है? उसने उत्तर दिया, क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया, उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे अब दो नहीं परन्तु एक तन हैं, इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे (मत्ती 19:3-6)। यहां हम देखते हैं कि विवाह होने के बाद एक पति-पत्नी का आपस में कितना घनिष्ट संबंध होता है, और किसी को यह अधिकार नहीं है कि वो इस रिश्ते को तोड़े या पति-पत्नी को अलग करे।

आज संसार में बहुत सारे ऐसे लोग भी हैं जो विवाह और इसकी पवित्रता में विश्वास नहीं करते। ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि यदि दो जन आपस में एक साथ रहना चाहते हैं तो विवाह किये बगैर रह सकते हैं। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि एक लड़का और लड़की विवाह करके एक साथ रहें। विवाह में दोनों पती-पत्नी एक-दूसरे के सहायक होते हैं। तथा विवाह करने के बाद वे अपने परिवार को आगे बढ़ाते हैं। विवाह का अर्थ है आपस में जुड़े रहकर अपने परिवार को आगे चलाना। यह एक ऐसा बंधन होता है जो अटुट होता है, और इसलिये यीशु ने कहा था जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे। यदि आप शादी-शुदा हैं तो अपनी शादी को मज़बूत बनाने के लिये ऐसा विचार रखें कि हम हमेशा साथ रहेंगे, और एक-दूसरे से अपने विचार साझा करें। कई लोगों की शादी अंत तक सफल रहती है क्योंकि दोनों एक-दूसरे पर विश्वास से चलते हैं, आपस में किसी बात में धोखा नहीं देते, और यही उनकी शादी की सफलता का राज़ होता है। शादी को सफल बनाना पति-पत्नी के हाथ में होता है।

एक सबसे बड़ा शत्रु जो आपके विवाह को असफल बना सकता है वो है स्वार्थपन। कभी भी अपने जीवन में स्वार्थी न बने। गाड़ी के दो पहियों की तरह आपको विवाहित जीवन में आगे बढ़ना है। कई बार कई पति कहते हैं कि जो मैं कह रहा हूं तुम्हें वैसे ही करना है, और कई बार पत्नी कहती है कि आप वही करेंगे जो मैं कह रही हूं। यह बात बिल्कुल सही नहीं है। प्रेरित पौलुस ने लिखा था, ''और मसीह के भय में एक-दूसरे के आधीन रहो। हे पत्नियों अपने-अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति-पत्नी का सिर है, जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है, और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के आधीन रहें। हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसे मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया (इफिसियों 5:21-25)। यदि आप वचन की बात को मानते हैं तो आप अवश्य ही अपने पति से प्रेम करेंगी, और यदि आप अपनी पत्नी से प्रेम रखेंगे तो परमेश्वर इससे प्रसन्न होगा। प्रेरित पतरस ने भी इसके विषय में कहा था। वह कहता है, ''हे पत्नियों तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिए कि यदि इनमें से कोई ऐसा हो जो वचन को न मानता हो तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल चलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाये।'' एक बहुत अच्छी सलाह पतरस देते हुए कहता है ''वैसे ही हे पतियों, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री

को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएं रूक न जाएं (1 पतरस 3:1,2,7)।

विवाह एक परिवार की बुनियाद है। यदि आप अपने विवाह को सफल बनाना चाहते हैं तो एक-दूसरे में विश्वास रखें, आपस में धोखाधड़ी न करें। आपका विवाहित जीवन दूसरों के लिये एक उदाहरण होना चाहिये। परन्तु एक बात हम सबको याद रखनी चाहिये कि विवाह करने से पहले हमें अच्छी तरह फैंसला कर लेना चाहिये कि मेरा यह रिश्ता सही रहेगा या नहीं? जिसके साथ आप अपना जीवन बिताने जा रहे हैं क्या आपके लिये वह सही रहेगा या नहीं? बाइबल कहती है, ''जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तब तक वह उससे बंधी हुई है, परन्तु जब उसका पति मर जाए, तो जिससे चाहे वह विवाह कर सकती है, परन्तु केवल प्रभु में'' (1 कुरि. 7:39)। सो इस बात को याद रखिये कि विवाह पूरे जीवन भर के लिये होता है इसलिये इसका आदर करें, और तलाक का त्याग करें।

जीवन का सुसमाचार

सनी डेविड

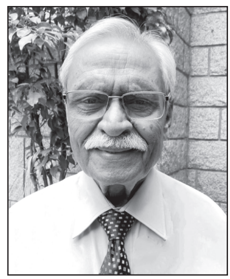

मनुष्य को अपने जीवन से अधिक बढ़कर और कोई वस्तु प्रिय नहीं है। मनुष्य सब कुछ खो सकता है, परन्तु वह अपने जीवन को हर कीमत पर बचाना चाहता है। यदि किसी घर में अचानक भयंकर आग लग जाए, तो लोग घर के भीतर सब कुछ छोड़कर अपनी जान लेकर भागते हैं। हाल ही में अभी हमारे शहर में एक भूकम्प आया था, कुछ ही क्षणों में सारे लोग अपने-अपने घरों से बाहर थे। उनके घरों में सामान था; बहुमुल्य वस्तुएं थीं, परन्तु उन्हें किसी भी चीज़ की कोई चिन्ता नहीं थी। उन्हें केवल अपने-अपने जीवनों की चिन्ता थी। और मान लीजिये यदि किसी प्रकार का कोई नुकसान हो जाता, तो लोगों को कोई विशेष दुख न होता, परन्तु वे इस बात से शान्ति तथा प्रसन्नता का अनुभव करते कि उनकी जान तो बच गई। क्योंकि मनुष्य सबसे अधिक अपने जीवन से प्रेम करता है। कुछ समय पूर्व मैंने एक डकेती की घटना के बारे में पढ़ा था। रात को जब कुछ लोग अपने घर में सो रहे थे तो डाकुओं ने घर में घुसकर हज़ारों रुपए का माल उड़ा लिया। परन्तु अभी वे माल लेकर उस घर से बाहर निकले ही थे, कि एक चौकीदार ने उन्हें देखकर शोर मचा दिया। कुछ ही क्षणों में लोगों की भीड़ लग गई, और उनमें से कुछ उन चोरों का पीछा करने लगे। शायद वह दिन उन चोरों के लिये बड़ा ही खराब था, क्योंकि अचानक वहां कुछ पुलिसवाले आ निकले और वे भी उनका पीछा करने लगे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वे बच नहीं सकते तो वे चोरी का सारा माल वहीं छोड़कर भाग निकले। कितनी मेहनत की होगी उन लोगों ने इस चोरी को करने के लिये, परन्तु इतना जोखिम उठाने के बाद भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा। लेकिन आप महसुस कर सकते हैं कि वे चोर इस बात से कितने खुश हुए होंगे, कि कम से कम उनकी जान तो

बच गई। क्योंकि मनुष्य अपने जीवन से बढ़कर ओर किसी वस्तु को मूल्यवान नहीं समझता। वह अपने जीवन को बचाने के लिये सब कुछ दे सकता है।

परन्तु जीवन क्या है? पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहाँ एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ उठाएंगे। और यह नही जानते कि कल क्या होगा: सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती हैं; फिर लोप हो जाती है।" (याकूब ४: १३, १४)। हज़ारों वर्ष पूर्व मुसा ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा था, ''हे प्रभु, तु पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, या तूने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है। तू मनुष्य को लौटा कर चूर करता है, और कहता है, कि हे आदमियों, लौट जाओ! क्योंकि हज़ार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे है. जैसा कल का दिन जो बीत गया, या जैसे रात का एक पहर। तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है; वे स्वपन से ठहरते हैं; वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं। वह भोर को फूलती और बढ़ती है, ओर सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है। क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं। तू ने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है। क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द की नाई बिताते हैं। हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमन्ड केवल कष्ट भर शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्द कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। तेरे क्रोध की शक्ति को और भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता हैं? हमको अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाएं।" (भजन संहिता 90:1-13)।

मित्रो, मनुष्य अपने जीवन को चाहे कितना भी बचाना चाहे, वह उसे नहीं बचा सकता। वह उसे चाहे कितना भी बढ़ाना चाहे, वह उसे नहीं बढ़ा सकता। और इससे पहिले, कि वह अपने जीवन को वास्तव में समझ ले वह जाता रहता है। वास्तव में हम में से प्रत्येक मनुष्य के लिये मुसा की यह प्रार्थना बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है, कि हम अपने परमेश्वर से यह वरदान मांगे कि वह हमें अपने दिन गिनने की समझ दे ताकि हम बुद्धिमान हो जाएं। जिससे कि हम जानें कि वास्तव में मनुष्य का जीवन खाना-पीना और सांस लेना ही नहीं है, परन्तु इससे भी बढ़कर. कुछ और है, अर्थात् वह एक आत्मिक प्राणी है। उसके पास एक आत्मा है, एकं ऐसी वस्तु है जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। मनुष्य की आत्मा वास्तव में उसका प्राण है। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? (मत्ती 16:26)। और एक अन्य स्थान पर उसने कहा, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।'' (यूहन्ना 6:27)।

सो मित्रो, यदि मनुष्य जीवन के महत्व को समझता है, यदि वह अपने जीवन को बचाना चाहता है, यदि वह जीवन से प्रेम करता है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी आत्मा

की चिन्ता करे। क्योंकि शरीर जबकि नाशमान है, आत्मा अमर है, अर्थात् उसका अस्तित्व कभी नहीं मिटता। परन्तु बाइबल कहती है, कि "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:13, 14)। इसका अर्थ यह है, कि पृथ्वी पर मनुष्य की देह के अस्तित्व का अन्त हो जाने के बाद प्रत्येक मनुष्य की आत्मा एक ऐसे अनन्तकाल में प्रवेश करेगी जिसका कभी अन्त न होगा। और जिस स्थान पर मनुष्य उस समय प्रवेश करेगा, उसका निश्चय वह स्वयं आज कर सकता है। यदि आज वह सकेत या तंग मार्ग पर चल रहा है तो वह अनन्त जीवन में प्रवेश करेगा। परन्तु यदि वह उस मार्ग पर हैं जो चाकल या चौड़ा है तो वह अनन्त विनाश में प्रवेश करेगा। सकरा मार्ग परमेश्वर का मार्ग है, और चाकल मार्ग जगत का मार्ग हैं या शैतान का मार्ग है। इसलिये, इस बात में कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर किसी भी मनुष्य को नरक या स्वर्ग में नहीं भेजता, परन्तु प्रत्येक मनुष्य वहां स्वयं अपनी ही इच्छा से प्रवेश करता है। जिस प्रकार से आरम्भ में आदम और हव्वा के पास यह निश्चय करने की योग्यता थी, कि वे वाटिका में परमेश्वर की उपस्थिति में रहकर जीवित रहें या उससे दूर होकर मर जाएं। वैसे ही आज हर एक मनुष्य परमेश्वर के सकरे मार्ग पर चलने का निश्चय करके अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है या अपनी इच्छा के चाकल मार्ग पर चलकर अनन्त विनाश में प्रवेश करने का निश्चय कर सकता है। परन्तु कौन मनुष्य अनन्त विनाश में जाना चाहता है? कौन उस अनन्त अंधकार में हमेशा के लिये प्रवेश करना चाहता है, जहां हमेशा का रोना और दांत पीसना होगा? कौन आग की उस झील में हमेशा के लिये तड़पने के लिये प्रवेश करना चाहेगा जिसकी आग कभी बुझती नहीं? मित्रो, कोई मनुष्य ऐसे स्थान में हमेशा के लिये प्रवेश करना नहीं चाहेगा। और परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य उसके भीतर प्रवेश करे।

परन्तु, तौभी, परमेश्वर अपने पूर्व-ज्ञान से, अपने वचन के द्वारा, कहता है, कि बहुतेरे हैं जो उस अनन्त विनाश में प्रवेश करेंगे। क्यों? इसलिये, क्योंकि परमेश्वर जानता है कि संसार में अधिकाश लोग उसकी इच्छानुसार नहीं चलना चाहते, वे चाकल मार्ग पर चलना चाहते हैं। परन्तु वे जो अनन्त जीवन मैं प्रवेश करना चाहते हैं, उनके लिये परमेश्वर ने एक जीवन का मार्ग प्रगट किया है, ताकि उस पर चलकर वे उस में दाखिल हों। उसने अपने वचन को मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया, और उसे जगत के सब लोगों के पापों के बदले में क्रूस पर चढ़वाकर बलिदान कर दिया, ताकि उसके बलिदान के द्वारा हर एक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित हो जाए। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के लिये दे दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए (यूहन्ना 3:16)। परमेश्वर के पुत्र मसीह ने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले इस बात की आज्ञा दी थी, कि यह जीवन का सुसमाचार जगत के सारे लोगों में प्रचार किया जाए, और सुनकर जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसका उद्धार होगा। (मरकुस 16:15, 16)।

क्या आप अपने जीवन से वास्तव में प्रेम करते हैं? क्या आप अपने जीवन को वास्तव में बचाना चाहते हैं? अपनी आत्मा को बचाईए। क्योंकि यदि आप सम्पूर्ण जगत को प्राप्त करके भी अंत में अपनी आत्मा की हानि उठाएं तो आपको क्या लाभ होगा? परमेश्वर के पुत्र में विश्वास कीजिए, उसकी आज्ञा का पालन कीजिए। जीवन वास्तव में छोटा है, परन्तु याद रखें, अनन्तकाल बहुत बड़ा है।

मसीह में

जे. सी. चोट

बाइबल बताती है कि जन्म के समय हम बिना पाप के होते हैं। तब हम शुद्ध, अबोध और सुरक्षित होते हैं। पौलुस ने कहा कि बड़ा होने पर, जवाबदेही की उम्र तक पहुंचने पर, जब हमें सही और गलत की पहचान हो जाती है, तो हम पापी बन जाते हैं (रोमियों 3:23), और हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए परिवर्तित होकर छोटे बच्चों के जैसे बनना आवश्यक होता है (मत्ती 18:3)।

हम, जो पापी हैं, हमें उद्धार की आवश्यकता है, क्योंकि हम परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने वाले बन गए हैं (देखें 1 यूहन्ना 3:4)। पौलुस हमें याद दिलाता है कि "पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)।

परन्तु हम पाप और मृत्यु से कैसे बच सकते हैं? क्षमा पाकर, छुड़ाए जाकर, उद्धार पाए हुए की स्थिति में हमें कैसे बदला जा सकता है? मसीह कहता है कि यदि हम विश्वास करें और बपतिस्मा लें तो वह हमारा उद्धार करेगा (मरकुस 16:16)। जब पतरस ने लोगों की बड़ी भीड़ को वचन सुनाया और लोग विश्वासी बन गए थे और उन्होंने जानना चाहा था कि वे और क्या करें, तो उसने उन्हें बताया था कि वे मन फिराएं और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लें (प्रेरितों 2:38)। हमें बताया गया है कि जो उद्धार पाते थे, उन्हें प्रभु प्रतिदिन अपनी कलीसिया में मिला देता था।

प्रभु के आरम्भिक आज्ञापालन का हमारा अंतिम कदम बपतिस्मा, हमें संसार में से निकालकर मसीह में उसकी कलीसिया में ले आता है। केवल बपतिस्मा अपने आप में कुछ नहीं है, और हमारे लिए तब तक कुछ नहीं करेगा जब तक हम अपने पापों से मुड़कर परमेश्वर और मसीह में विश्वास न लाये, जो कि मन फिराने, परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने से होता है। उसके बाद बपतिस्मा लेने पर प्रभु के निर्देशों को मानते हुए अपने पापों को धो डालते हुए, पानी में दफ़नाए जाना आवश्यक है। हमें बताया गया है कि बपतिस्मा बचाता है (1 पतरस 3:21)। हमें पानी नहीं बचाता, बल्कि मसीह बचाता है। क्योंकि हम ने उसकी इच्छा के अनुसार बपतिस्मा लिया है। जैसा कि 1 पतरस 3:21 में पतरस ने कहा कि बपतिस्मा शरीर के मैल को धोने या नहाने के लिए नहीं है, बल्कि यह तो शुद्ध विवेक से परमेश्वर की आज्ञा

के सामने झुक जाने के लिए है।

फिर सवाल उठता है कि "जब तक कोई ऐसा काम न करे जो परमेश्वर ने उसे करने को कहा हो, तब तक परमेश्वर के साथ उसका विवेक शुद्ध कैसे हो सकता है? बेशक ऐसा नामुमकिन है, इसलिए आवश्यक है कि अपने पापों से मन फिरानेवाला विश्वासी ही बपतिस्मा ले।"

इसे कहने का एक और ढंग इस प्रकार से है कि जब कोई वचन के अनुसार बपतिस्मा लेता है यानी पानी में दफ़नाए जाकर नये जीवन की चाल चलने के लिए, पानी में से बाहर आता है तो उसे आत्मिक रूप में नया जीवन पाने के कारण जल और आत्मा से नया जन्म मिलता है (यूहन्ना 3:3-5)। पौलुस इसे इस प्रकार कहता है: "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं: देखो, वे सब नई हो गईं" (2 कुरिन्थियों 5:17)।

उद्धार पाने और नई सृष्टि बनने के लिए, मसीह में होना आवश्यक है, और मसीह में प्रवेश करने का एक ही तरीका है। प्रेरित पौलुस ने कहा, "क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अत: उस मुत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:3, 4)।

2 कुरिन्थियों 5:17 में पौलुस इसी बात को कह रहा था कि जीवन का नयापन मसीह में नई सृष्टि या नये लोग बनने से आता है। फिर पौलुस ने कहा, "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है" (गलातियों 3:26, 27)। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति कोट को पहनता है तो वह कोट के अंदर होता है या कोट के बाहर? बेशक वह कोट के अंदर ही होता है। इसी प्रकार से जब कोई बपतिस्मा ले चुका होता है तो इसका अर्थ है कि वह मसीह में है न कि मसीह के बाहर। इसका यह भी अर्थ है कि मसीह में हम परमेशवर की संतान हैं।

जो लोग यह कहते हैं कि उनका उद्धार पहले हुआ और बाद में उन्होंने बपतिस्मा लिया था, वे यह कह रहे हैं कि उनका उद्धार मसीह के बाहर या मसीह के बिना हुआ है। ऐसा कैसे हो सकता है? यदि वचन यह बताता है कि उद्धार पाने के लिए मसीह में होना आवश्यक है, और मसीह में हमें बपतिस्मा ही लाता है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि बपतिस्मा से पहले उद्धार होना असम्भव है।

फिर से, 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस बताता है कि हमारा बपतिस्मा एक ही देह में हुआ और कुलुस्सियों 1:18 कहता है कि वह देह कलीसिया है। इफिसियों 1:22, 23 में वह दिखाता है कि कलीसिया ही देह है और अंत में 4:4 में वह बताता है कि देह केवल एक ही है।

परन्तु यदि वह एक ही देह, कलीसिया है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया केवल एक ही है, और यदि हमारा बपतिस्मा उस देह या कलीसिया में हुआ है, तो कलीसिया

में प्रवेश करने का एक ही तरीका है, बपतिस्मा लेना! यह पूरी तरह से तर्कसंगत है।

सब बातों को मिलाने पर, हम जल और आत्मा से बपतिस्मा लेकर प्रभु की आज्ञा मानने पर मसीह में और उसकी कलीसिया में प्रवेश करते है। और उसी समय मसीह हमें अपनी कलीसिया में मिला देता है।

शारीरिक रिश्ते में, यानी जब हमारा शारीरिक परिवार में जन्म होता है, तो हम हमेशा के लिए उस परिवार के मेंबर बन जाते हैं। हमें वापस नहीं किया जा सकता। हम चाहें तो अपने परिवार के वफ़ादार और निष्ठावान सदस्य के रूप में रहकर उस परिवार के लाभ प्राप्त कर सकते हैं या चाहें तो इस प्रकार से जीवन जी सकते है जिससे हमें उस परिवार के सभी लाभ मिलें या चाहें तो ऐसा जीवन जी सकते हैं जिससे हमें उस परिवार की सम्पत्ति से वंचित होना पड़े। परन्तु रहेंगे हम अपने माता पिता के बच्चे ही।

यही बात आत्मिक रूप में सच है। जब हम मसीह में और उसकी कलीसिया या परिवार में दाखिल होते हैं तो हम मसीह में ही रहेंगे और उसके एक परिवार के सदस्य ही रहेंगे, परन्तु हम चाहें तो विश्वासी बने रहें या चाहें तो अविश्वासी हो जाएं। परमेश्वर के बालक के रूप में मरने तक विश्वासी रहने वालों को प्रभु ने जीवन का मुकुट देने का वचन दिया है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। यदि हम अविश्वासी हो जाएं तो परिवार की स्थानीय मण्डली हम से संगति तोड़ सकती है, जिससे हमारे मन न फिराने पर हम सदा के लिए नाश हो सकते हैं (मत्ती 25:46)। यदि हम अपने पापों से मन फिरा लें और अपने प्रभु के पास लौट आएं तो हम क्षमा किए जायेंगे जिससे हम उन लाभों को फिर से प्राप्त कर सकें जो उन लोगों को दिए जाते हैं, जो प्रभु के हैं। इस आत्मिक पारिवारिक सम्बन्ध को बेहतर ढंग से समझने के लिए लूका 15 में दी गई उड़ाऊ पुत्र की कहानी को पढ़ें। क्या आप मसीह में हैं? क्या आप उसकी कलीसिया के सदस्य हैं? क्या आप परमेश्वर के विश्वासी बालक हैं यदि नहीं तो यह दुखद सच्चाई है परन्तु आप बचाए हुए हैं। इससे पहले कि बहुत देर हो जाए, प्रभु के निमन्त्रण को सुनकर उसके पास लौट आएं।

मिनिस्टर्स या सेवक - वे कौन हैं?

बायरन निकोल्स

आपने देखा होगा कि जिन लोगों को पहले "प्रीचर/मुनाद" (प्रचारक। मुनादी करने वाला होने के कारण, मुनाद) या "गॉस्पल प्रीचर" (सुसमाचार प्रचारक) कहा जाता था, आज वे आम तौर पर "मिनिस्टर" शब्द का इस्तेमाल करते हैं। समाचार पत्रों और मसीही प्रकाशनों के अधिकतर विज्ञापनों में "टैलिफोन डायरेक्ट्री में, चर्च बिल्डिंगों में, बिजनस कार्डों पर, इंट्रोडक्शन देने में, बातचीत में देखा जा सकता हैं। कोई कह सकता है कि "इसमें कोई प्रॉब्लम नहीं है"? मेरे विचार से है।

नये नियम में इस्तेमाल होने वाले और अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद होने वाले "मिनिस्टर" शब्द के हर यूनानी शब्द के विस्तृत विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है कि यह शब्द संज्ञा

शब्द है या क्रिया शब्द। इतना कहना ही काफ़ी है कि यूनानी शब्द आम तौर पर ऐसे व्यक्ति या सहायक, कर्मचारी या ऐसे व्यक्तियों के द्वारा की गई काम की अवधारणाओं को दर्शाता हैं। अन्य शब्दों में, नये नियम के "मिनिस्टर" (सेवक) बुनियादी तौर पर सेवा के किसी काम में लगे लोग हुआ करते थे। नये नियम को सरसरी तौर पर पढ़ने पर भी इस तथ्य का पता चल जाता है कि हर मसीही, यानी मसीह के हर चेले के लिए "मिनिस्टर" यानी सेवक होना आवश्यक है। बात को छोटा रखने के लिए मैं रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 का हवाला देता हूं। इन अध्यायों में हमें साफ पता चलता है कि पूरी कलीसिया में अलग-अलग भाग हैं जो एक इकाई के रूप में कार्य करने, सेवा या काम करने या "मिनिस्टर" होने के लिए बताए गए हैं। हर अंग का अपना अलग काम है परन्तु हर सदस्य को काम करना है। अपने हिस्से का काम करके कलीसिया अर्थात देह का हर अंग (सदस्य) मिनिस्टर के रूप में काम कर रहा होता है।

मेन स्ट्रीम कांग्रिगेशन का मिनिस्टर या कोई भी नाम हो, तो अधिकतर उस प्रचारक की पहचान मिनिस्टर के रूप में होती है। यदि हर मसीही मिनिस्टर है तो प्रचारक उस मण्डली का जिसमें वह काम करता है मुख्य मिनिस्टर नहीं है, नहीं तो उस मण्डली के दूसरे लोग वह नहीं बन पाते जो मसीह उनसे बनने की उम्मीद करता है। ऐसा सम्भव नहीं है कि किसी मण्डली में केवल एक ही मिनिस्टर हो। यदि ऐसा कहीं हो भी जाए तो यह वह प्रचारक नहीं होगा जो मिनिस्टर था- यह उस मण्डली का कोई और व्यक्ति हो सकता है जो मसीह के सेवक होने का बाइबल के अनुसार पद पाने के अधिक योग्य बना।

अंग्रेजी में "मिनिस्टर" "मिनिस्टरी" और "मिनिस्टरिंग" शब्दों का इस्तेमाल नये नियम में अलग-अलग रूपों में हुआ है। यह बिल्कुल सही है कि मिनिस्टरों के रूप में प्रचारकों के कई हवाले हैं परन्तु जो प्रचारक नहीं हैं उन्हें भी मिनिस्टर कहना बिल्कुल सही और उपयुक्त है। यह ध्यान देने वाली बात है कि मसीही लोगों के अलग-अलग समूहों के लोगों को कई बार मिनिस्टर कहा गया। ऐसा ही एक मामला इब्रानियों 6:10 में मिलता है जहां लेखक मसीही लोगों की एक बड़ी मण्डली से बात कर रहा है और उनके दूसरे लोगों की "सेवा की" होने की बात करता है। मसीही लोगों के एक बड़े और अलग समूह को लिखते हुए पतरस ने उन सब से बढ़कर सेवा करनी (मिनिस्टरिंग) की बात की (1 पतरस 4:10)। रोमियों 15:27 में पौलुस ने बताया कि मकिदूनिया और अखाया में अन्यजातियों से बने मसीही लोगों ने यरूशलेम के निर्धन और यहूदी मसीहियों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मदद करने के लिए अपना धन देकर मिनिस्टरों (सेवकों) के रूप में सेवा करनी थी। नये नियम में महिलाओं को साफ़-साफ़ मिनिस्टर या सेवक बताया गया है। उनके उदाहरणों में मत्ती 8:15 में पतरस की सास, मत्ती 27 में कई महिलाएं और लूका 8:3 में कई महिलाएं हैं।

यह जानना दिलचस्प है कि लोग बिना जाने भी मिनिस्टर हो सकते हैं। पौलुस हमें बताता है कि सरकारी अधिकारी असल में परमेश्वर के सेवक (मिनिस्टर) हैं (रोमियों 13:1-7)। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि कुछ लोगों को इस तथ्य का पता नहीं है पर फिर भी है यह सच।

कुछ अपवादों के साथ नया नियम सब मसीहियों को शामिल करते हुए विस्तृत अर्थ में सेवकों और सेवकाई करने की बात करता है, केवल उन्हीं की नहीं जो मुख्य रूप में वचन के प्रचार की सेवा करते हैं। हर मसीही के लिए मिनिस्टर या सेवक होना आवश्यक है। नर हों या नारी, बच्चे हों या बूढ़े, बहुत अधिक गुणी हों या कम गुणी, हर किसी के लिए हर प्रकार से जो परमेश्वर को स्वीकृत है और परमेश्वर की इच्छा को समर्पित हों सेवा करना (मिनिस्टर होना) आवश्यक है। वचन के सामान्य अर्थ में हम में से हर कोई प्रचारक नहीं बन पाएगा, और इसमें कोई बुराई भी नहीं है, परन्तु हर मसीही के लिए मसीह का और मसीह के लिए मिनिस्टर यानी सेवक होना आवश्यक है।

प्रचारक को मिनिस्टर कहना बेशक न तो बाइबल के उलट है, और न यह गलत है, क्योंकि वह है परन्तु जो लोग सचमुच में मसीही हैं, वे सब के सब मिनिस्टर हैं। तो क्या समझ या समझदारी के साथ बाइबल से अधिक मेल खाता यह नहीं होगा कि मिनिस्टर शब्द को केवल उन्हीं तक सीमित न किया जाए जो वचन सुनाने की सेवा देते हैं?

फिर से, यह सही है कि यूनानी भाषा में अलग-अलग शब्द हैं जिनका अनुवाद नये नियम में "सेवक" (अंग्रेजी में मिनिस्टर) किया गया है और कई बार ये अंतर बहुत कम होते हैं। परन्तु नये नियम में किसी व्यक्ति के या किसी कारण "मिनिस्टर" (या सेवक) के इस्तेमाल को संक्षित करना भी सही है। प्रभु करे कि हर मसीही प्रभु की सेवा उसके विश्वासी सेवक के रूप में करने में लगा रहे।

यीशु को दण्डवत करना

रे हॉक

यूहन्ना की पुस्तक के आरम्भ में आपको यीशु के स्वभाव और पूर्व अस्तित्व में होने का पता चलता है: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। ... और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया (यूहन्ना 1:1, 14)।

यीशु परमेश्वर है, इसलिए परमेश्वर के रूप में उसे दण्डवत किया गया या उसकी आराधना की गई। पूर्व देश से उसके दर्शन के लिए आए पण्डितों (विद्वानों) ने पूछा था, "यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं" (मत्ती 2:2)। बाद में जब वे उस घर में पहुंचे जहां यीशु था, तो उन्होंने "मुंह के बल गिरकर बालक को प्रणाम किया, और अपना-अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई'' (मत्ती 2:11)।

किसी को भी यीशु की उपासना क्यों करनी चाहिए? यीशु ने अपनी परीक्षा किए जाने के समय शैतान से कहा था, " 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर' '' (मत्ती 4:10)। क्या यीशु परमेश्वर है? यदि नहीं तो हमें उसे दण्डवत नहीं करना चाहिए और न ही हम कर सकते हैं। यदि वह परमेश्वर है तो न केवल हम उसे दण्डवत कर सकते हैं बल्कि हमारा फर्ज़ है कि हम उसे दण्डवत करें।

अगर यीशु परमेश्वर है तो वह उसकी की जाने वाली उपासना को स्वीकार करेगा। यदि वह परमेश्वर नहीं है, तो उस आदर को जिसका हक्कदार केवल परमेश्वर है, उसे देना परमेश्वर की निंदा करना होगा। पहली सदी के लोगों ने यीशु को परमेश्वर मानकर उसे दण्डवत क्यों किया, जबकि आज के कुछ लोग जो उसके लोग होने का दावा करते हैं, ऐसा करने से इनकार करते हैं? कुछ तो इस हद तक चले गए हैं कि उन्होंने गीतों की अपनी पुस्तकों में से ऐसे किसी भी सम्बोधन को निकाल दिया है, जिसमें सीधे तौर पर यीशु की आराधना की बात कही हो!

पहली सदी में एक कोढ़ी ने उसके पास "आकर उसे प्रणाम किया" (मत्ती 8:2)। उस कोढ़ी के मन में कोई उलझन नहीं थी, क्योंकि इस प्रणाम किए जाने में वह अकेला नहीं था। एक और अवसर पर एक सरदार ने भी ऐसा ही किया था (मत्ती 9:18)। असल में उसे दण्डवत करने वालों में से एक ने एक बार उससे कहा था कि "सचमुच, तू परमेश्वर का पुत्र है" (मत्ती 14:33) एक अन्य अवसर पर एक स्त्री ने यीशु को प्रणाम करके उससे सहायता मांगी थी (मत्ती 15:25)। ध्यान दें कि उसने उससे वैसे ही विनती की थी, जैसे हम प्रार्थना में किया करते हैं। और लोगों ने भी उसे दण्डवत किया था (मत्ती 12:36; 20:20)।

मुर्दो में से जी उठने के बाद यीशु कुछ चेलों से मिला और उन्होंने झुककर उसके पांवों में पड़कर उसे प्रणाम किया था (लूका 24:52)

इब्रानियों की पुस्तक के आरम्भ में हम देखते हैं कि साफ़ लिखा है, "क्योंकि स्वर्गदूतों में से उसने कब किसी से कहा, 'तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ?' और फिर यह, मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा?' और जब पहिलौठे को जगत में फिर लाता है, तो कहता है, 'परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करें।' '

"और स्वर्गदूतों के विषय में यह कहता है, वह अपने दूतों को पवन, और अपने सेवकों को धधकती आग बनाता है। परन्तु पुत्र के विषय में कहता है, 'हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है' " (इब्रानियों 1:4-8)।

परमेश्वर को कितनी बार कहने की आवश्यकता है कि ऐसा ही है? एक ही बार! कलीसिया के आरम्भ के बाद इकट्ठा होकर रोटी तोड़ने के लिए आने के हमें कितने उदाहरण मिलते हैं? एक ही! एक उदाहरण को नमूने के रूप में लेकर, हम यीशु द्वारा प्रणाम या दण्डवत को स्वीकार करने के इतने उदाहरणों को अनदेखा कैसे कर सकते हैं? यदि पहली सदी के लोग और स्वर्गदूतों के लिए यीशु को दण्डवत करना या उसकी आराधना करना सही था तो आज हमारे लिए भी सही है। यदि नहीं तो क्यों नहीं?

वह मेरा प्रभु है। थोमा पुकार उठा था, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर" (यूहन्ना 20:28)। क्या वह आपका प्रभु है?

वह मेरा राजा है। वह प्रभुओं का प्रभु और राजाओं का राजा है (1 तीमुथियुस 5:15; प्रकाशितवाक्य 17:14; 14:19)। क्या वह आपका राजा है?

वह मेरा उद्धारकर्त्ता है (लूका 2:11; यूहन्ना 4:42; प्रेरितों 5:3; इफिसियों

5:23)। क्या वह आपका उद्धारकर्त्ता है?

वह मेरा सिर है (इफिसियों 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:8-24)। क्या वह आपका सिर है?

वह मेरा परमेश्वर है (यूहन्ना 10:28; तीतुस 2:13)? क्या वह आपका परमेश्वर है?

वह मेरा महायाजक है (इब्रानियों 3:1; 4:14; 5:5; 6:20; 9:11)। क्या वह आपका महायाजक है?

वह मेरा पति है, क्योंकि मैं उसकी दुल्हन या पत्नी अर्थात् कलीसिया में हूं (रोमियों 7:4.; प्रकाशितवाक्य 21:2, 9)। क्या आप उससे ब्याहे गए हैं?

उसने मुझे अपने लहू से खरीदा (प्रेरितों 20:28)। क्या उसने आपको खरीदा?

मुझे लगता है कि प्रेरितों के लिए यीशु को दण्डवत करना सही था। यह बात मुझे आज उसकी आराधना करने के लिए अधिकार के रूप में प्रेरितों का स्वीकृत उदाहरण देती है।

हे प्रभु यीशु, मुझ से प्रेम करने और मेरा उद्धार करने के लिए, धन्यवाद!

बिना शर्त प्रेम की सीमाएं

डेविड डब्ल्यू चैड्वेल

परमेश्वर के मनुष्यों के साथ अपने बिना शर्त प्रेम की वास्तविकता शायद सबसे जटिल है। जब आदम और हव्वा परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में नाकाम रहे तब भी उसे उन से प्रेम था (उत्पत्ति 3)। जब नूह के समय के संसार के लोग इतने दुष्ट हो गए थे कि उनके मन के विचार में जो कुछ भी आता वह बुरा ही होता था, तब भी परमेश्वर उनसे प्रेम करता था (उत्पत्ति 6:5)। उसका प्रेम जंगल में इस्राएलियों की क्षमा न की जाने वाली गलतियों के दौरान, न्यायियों के काल में उनकी अविश्वसनीय बुराई में, विभाजित राष्ट्र के काल में उनकी मूर्तिपूजा में, और उनकी दुष्टता में भी बरकार रहा जिसके कारण उन्हें अश्शूर और बाबुल की दासताओं में जाना पड़ा था।

परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम अकेले इस्राएल के लिए नहीं था। योना को यह जानकर बड़ा अफसोस हुआ था कि परमेश्वर क्रूर, मूर्तिपूजक अश्शूरियों से प्रेम करता था। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के रूप में इस्राएल को चुना जाना कभी भी इस बात का सबूत नहीं था कि वह अन्य लोगों से प्रेम नहीं करता था। वास्तव में परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लोग होने के लिए इसलिए चुना क्योंकि वह सारी मनुष्यजाति से प्रेम करता था। इस्राएलियों के माध्यम से उसने संसार के लिए उद्धारकर्त्ता को लाना था।

सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण परमेश्वर के अपने एक भाग अर्थात् अपने पुत्र को मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर भेजने के लिए यीशु की बात बताते हुए कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया" (यूहन्ना 3:16)।

यह एक सच्चाई है कि परमेश्वर सब लोगों से प्रेम करता है। वे दुष्ट हों या धर्मी,

सबसे। हर संस्कृति के लोगों से, हर पृष्ठभूमि के लोगों से। कोई भी इतना छोटा, इतना महत्वहीन, इतना खोट से भरा, इतना पाप से भरा, इतना निर्बल, इतना खराब, इतना परेशान, इतना व्याकुल, या इतना कुछ भी नहीं होता कि उसे परमेश्वर के प्रेम से अलग किया जा सके ।

क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने के बाद सब लोगों के लिए परमेश्वर के शर्तरहित प्रेम का संदेश क्या है? वह संदेश यह है कि परमेश्वर किसी की भी बुराई या दुष्टता से इतना नाराज नहीं होता कि वह उसे जो मन फिराकर उसमें विश्वास लाता और अपना जीवन उसे दे देता है, क्षमा न कर सके। वह सभी उड़ाऊ पुत्रों का जो अपने आपे में आकर घर लौटने के इच्छुक हों, प्रेमी और आनन्दित पिता है। परमेश्वर के सामने क्षमा करने में बहुत देर हो चुकी, बहुत बुरा व्यक्ति या बहुत भयानक पाप जैसी कोई बात नहीं होती। वह किसी भी व्यक्ति के लिए, जो क्रूस पर चढ़ाए उसके प्रायश्चित को स्वीकार करता है, नये सिरे से आरम्भ करने वाला परमेश्वर है। वह पूर्ण क्षमा, पूरी तरह से सच्चा और पूर्णतया पवित्र परमेश्वर है जो बिना किसी छिपाव या बिना किसी खूबी के पश्चाताप करने वाले व्यक्ति से प्रेम करता है।

परमेश्वर के बिना शर्त प्रेम का संदेश क्या है? क्या केवल **होने से** परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम किसी की जवाबदेही और जिम्मेदारी को खत्म कर देता है? बिना शर्त प्रेम है, तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि कोई अपने पापों और विद्रोहों को नज़रअंदाज़ कर दे?

परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम जवाबदेही, ज़िम्मेदारी या अपश्चातापी व्यक्ति के पापों को नष्ट नहीं कर देता है। वास्तव में परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम अपश्चातापी व्यक्ति को विशेष रूप से सहायता नहीं करता है। वह प्रेम मसीह के पास लौट आने वाले पश्चातापी व्यक्ति के लिए क्षमा, करूणा, और अनुग्रह के लिए अवसर का वह द्वार है जिसे बंद नहीं किया जा सकता। उस प्रेम के बावजूद, उस व्यक्ति की जवाबदेही जो यीशु में परमेश्वर के बलिदान को न मानकर मन फिराने से इनकार कर देता है, बदल नहीं जाती है। परमेश्वर का बिना शर्त प्रेम मसीह में आने वाले पश्चात्तापी व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा उपहार है! पर उस व्यक्ति के लिए जो मसीह का इनकार करता है वह परमेश्वर के प्रेम रूपी उपहार से वंचित है।

कोरह का विद्रोह

जैरिल (पोली) क्लाइन

मूसा का पिता अम्राम और कोरह का पिता यिसहार दोनों भाई थे (निर्गमन 6:18-21)। इस प्रकार से कोरह और मूसा चाचा और ताऊ के बेटे, भाई थे। उनका दादा कहात लेवी का पुत्र था।

जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र के सब पहलौठों को मारा था, उसी दिन से उसने

इस्राएल के सब पहलौठों को अपने लिए पवित्र ठहरा दिया था। परन्तु इस्राएल के पहलौठों की जगह, परमेश्वर ने अपने सामने खड़े होने के लिए लेवियों के गोत्र को चुना था। लेवी परमेश्वर के थे। "वे मेरे ही ठहरेंगे; मैं यहोवा हूं'' (गिनती 3:12, 13)।

लेवी के गोत्र को हारून याजक के पास लाकर उसके सामने रखा गया था कि वे मिलाप वाले तम्बू की सेवा करने के लिए तम्बू के सामने पूरी मण्डली के साथ-साथ उसके लिए सेवा करते हुए डयूटी दें (गिनती 3:6, 7)।

लेवियों को साक्षी के तम्बू पर नियुक्त किया गया था। उनका काम उसके कुल सामान की देखभाल करना था । उसे खड़ा करने और उसे गिराने तक उससे जुड़ी सब बातों का ध्यान रखना उन्हीं का जिम्मा था। उन्होंने इसके आस पास डेरा डालना था ताकि इस्राएलियों की मण्डली पर कोई क्रोध न आन पड़े, क्योंकि "साधारण जन" इसके समीप नहीं जा सकते थे (गिनती 1:50-53)।

मूसा और कोरह दोनों कहाती थे, इस कारण वे दोनों मन्दिर के दक्षिणी ओर एक ही जगह पर रहते थे (गिनती 3:29)।

कोरह की जिम्मेदारी कुछ सबसे पवित्र काम करने की थी। कहातियों को संदूक,

मेज, दीवट, वेदियां और मन्दिर के बर्तनों का जिम्मा दिया गया था (गिनती 3:17, 19, 27-32)।

परन्तु मूसा और हारून तथा उसके पुत्रों को तम्बू के काम करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी (गिनती 3:38)। पवित्र वस्तुओं को केवल वे और केवल वही छू सकते थे। उनके द्वारा मन्दिर की पवित्र वस्तुओं को ढांप लेने का काम पूरा कर लिए जाने के बाद ही, कहात के पुत्र (कोरह उन्हीं में से था) उन्हें उनकी नई जगह पर ले जाने के लिए आगे आ सकते थे (गिनती 4:15)।

परमेश्वर ने चाहे लेवियों को, जिसमें कोरह भी शामिल था, अपनी महिमा करने के लिए उन्हें एक काम दिया था, पर यह काफी नहीं था (गिनती 16:9)। कोरह और मण्डली के 250 अगुओं के लिए जिन्हें सभा में चुना गया था, नामी लोगों को यह काफ़ी नहीं लगा।

विद्रोह के उसके शब्दों को सुनें। अपने आप से पूछें कि आपको ये शब्द कहीं सुने सुने से तो नहीं लगते हैं। उन स्त्रियों के मुंह से जो अलग भूमिका चाहती हैं, पुरुषों के मुंह से जो ऐल्डरों के अधिकार को नकारते हैं ... उनके मुंह से जो अपनी प्रतिभा को "दिखाना" चाहते हैं, उनके मुंह से जिनके अधिक "प्रगतिशील" विचार हैं: "तुम ने बहुत किया, अब बस करो; क्योंकि सारी मण्डली का एक एक मनुष्य पवित्र है, और यहोवा उनके मध्य में रहता है; इसलिये तुम यहोवा की मण्डली में ऊँचे पदवाले क्यों बन बैठे हो?" (गिनती 16:3)।

पृथ्वी का सबसे विनम्र व्यक्ति भूमि पर गिरकर परमेश्वर से विनती करने लगा।

"कि ... यहोवा दिखला देगा कि उसका कौन है, और पवित्र कौन है, और उसको अपने समीप बुला लेगा; जिसको वह आप चुन लेगा उसी को अपने समीप बुला भी लेगा'' (गिनती 16:5)।

हम केवल प्रभु के सामने ही विनती कर सकते हैं। वही, और केवल वही जानता है. कि वह क्या चाहता है और उसे क्या पसंद है। अपने निकट वह केवल उन्हीं लोगों को ला सकता है जो उसके तरीके से काम करने को तैयार हों। क्योंकि उसके निकट हमें उसकी इच्छा ही लाती है। बिना उस इच्छा के, हम दूर चले जाते हैं , उससे दूर, दूर जो उसे भाता है, उस तूफानी समुद्र के बीच में जो हमें अच्छा लगता है।

यह विडम्बना ही है कि अध्याय 15 इस्राएलियों के वस्त्रों के छोर पर झालर लगाए जाने सम्बन्धी निर्देशों के साथ खत्म होता है। उन्हें यहोवा की उन सब आज्ञाओं को याद दिलाने के लिए ये निर्देश दिए गए थे ताकि "तुम अपने-अपने मन और अपनी-अपनी दृष्टि के वश में होकर व्यभिचार न करते फिरो " (आयत 39)

किसी बात को जो परमेश्वर चाहता है इसलिए नज़रअन्दाज़ करना क्योंकि हमें कुछ और पसन्द है, उसके परम पवित्र नाम की निंदा करना (अपने पांव झाड़ देना) है । यह उसके बिल्कुल विपरीत है जिसकी इच्छा होने का हम दावा करते हैं ।

क्या इसमें कोई हैरानी की बात है कि यहूदा 11 में परमेश्वर आज भी हमें कोरह के विद्रोह के बारे में याद दिलाता है?

कोरह का प्रभाव बहुत अधिक था। उसके साथ परमेश्वर के डेरे के कुछ बेहतरीन अगुवे मूसा के विरुद्ध खड़े हो गए थे, और उनके कारण परमेश्वर के लोग तम्बू के उसी द्वार पर मूसा के विरुद्ध खड़े होने के लिए आ गए थे (गिनती 16:19)।

परमेश्वर के साथ चाहे एक-दो ही क्यों न हों, वह अपनी इच्छा पर दृढ़ रहता है।

कोरह और दो अन्य अगुवे, दातान और अबीराम, यहोवा के सामने मर गए थे। फिर भी उनके पुत्र नहीं मरे थे (गिनती 26:11)। यहोवा की ओर से आग आई जिससे 250 नामी लोग भस्म हो गए (गिनती 16:31-35)।

लोगों ने उन "अच्छे लोगों" की मृत्यु के लिए मूसा और हारून पर गलत दोष लगाया (आयत 41), इस कारण परमेश्वर ने पूरी मण्डली को मार डालना चाहा! यही हुआ, कोरह वाली घटना में मरने वालों के अलावा, केवल 14,700 लोग और मरे (आयत 49)। (यह मण्डली हमारी आज की सबसे बड़ी मण्डलियों से कई गुणा बड़ी थी। आकार, प्रतिष्ठा, किसी के किए जाने वाले कामों को कभी सही नहीं ठहरा देता।)

आपकी मण्डली का क्या हाल है? प्रभु जानता है कि उसके लोग कौन हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें वह अपने समीप ला सकता है क्योंकि वे उसकी इच्छा पर चलते हैं।

बाइबल के उद्धारकर्ता की ओर वापस

चार्ल्स बाक्स

बाइबल की सपष्ट शिक्षा है कि यीशु मसीह है और परमेश्वर का पुत्र है। यीशु के बपतिस्मे के समय परमेश्वर ने उसे अपना पुत्र माना। "और देखो, यह आकाशवाणी हुई: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं" (मत्ती 3:17)। यीशु के रूपांतर के समय पहाड़ पर भी यही हुआ जहां यीशु मूसा और एलिय्याह के साथ बातें करते दिखाई

दिया था। ''वह बोल ही रहा था कि एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और उस बादल में से यह शब्द निकला: ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो'' (मत्ती 17:5)। पतरस का यह अंगीकार सही था, ''...हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है'' (यूहन्ना 6:69)। हम बाइबल की इस बात को मान लें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

यीशु के विषय में तथ्य: बाइबल हमें यीशु के बारे में बहुत सी बातें बताती हैं जिनसे हम उससे प्रेम करें और उसे धन्यवाद दें। बाइबल बताती है कि आदि में यीशु परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर के बराबर था। ''जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा'' (फिलिप्पियों 2:6)। संसार में आने से पहले वह परमेश्वर ''के स्वरूप में था।'' यह एतिहासिक तथ्य है कि यीशु स्वर्ग में रहता था और उसने इस पृथ्वी पर जन्म लिया। उसके जन्म का स्थान बैतलहम था ''हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे'' (मत्ती 2:1)।

संसार में यीशु का इतना अधिक प्रभाव होने का कारण उसको परमेश्वर का पुत्र होना था। ''स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा'' (लूका 1:35)। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु परमेश्वरत्व का सदस्य था जिसमें परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और मसीह जो पुत्र है, और पवित्र आत्मा ''क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)।।

यूहन्ना ने कहा, ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)। वचन का देहधारी होना कुंवारी से जन्म के द्वारा हुआ। "इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी'' (यशायाह 7:14)। कुंवारी से जन्म केवल यीशु का हुआ था।

आरम्भ में यीशु परमेश्वर के साथ था "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था'' (यूहन्ना 1:1)। उद्धार को सम्भव बनाने के लिए वह स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया ''क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूँ'' (यूहन्ना 6:38)।

यीशु ने जो दावे किए: यीशु ने अपने लिए बहुत से दावे किए। वह एक महान गुरु और नबी था परन्तु उसने इससे कहीं बड़ा होने का दावा किया।

यूहन्ना 17:1 यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया। ''यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, 'हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है; अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।' ''

कुएं पर सामरी स्त्री के साथ बातचीत में यीशु ने मसीहा होने का दावा किया ''स्त्री

ने उससे कहा, 'मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।' यीशु ने उस से कहा, 'मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ' '' (यूहन्ना 4:25-26)।

यूहन्ना 14:6 में यीशु ने परमेश्वर तक जाने वाला मार्ग होने का दावा किया ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।''

यूहन्ना 8:24 में यीशु ने कहा कि यदि हम चाहते हैं कि हमारे पाप क्षमा किए जाएं तो हमें उसमें विश्वास करना होगा। ''इसलिये मैं ने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ तो अपने पापों में मरोगे।''

यीशु ने दावा किया कि वह दुख उठाएगा, मर जाएगा और जी उठेगा। "फिर उसने कहा, 'मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है कि वह बहुत दु:ख उठाए, और पुरनिए और प्रधान याजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे' '' (लूका 9:22)।

यीशु के आश्चर्यकर्म उसके दावों को साबित करते हैं: यीशु ने जबर्दस्त दावे किए। अपने दावों को साबित करने के लिए उसने बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म किए। आश्चर्यकर्म वह कार्य होता है जिसमें परमेश्वर अपने प्राकृतिक नियम से हटकर काम करता है। आश्चर्यकर्म प्रकृति के नियमों के हमारे ज्ञान से बाहर है। नीकुदेमुस सही था, जब उसने यीशु से कहा, ''...हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है, क्योंकि कोई इन चिह्नों को जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नहीं दिखा सकता'' (यूहन्ना 3:2)।

यीशु ने बीमारी, प्रकृति, तथा मृत्यु पर अपनी सामर्थ को दिखाया। मत्ती 15:30 में यीशु ने हर प्रकार की बीमारी और रोग को ठीक किया। मत्ती 8:26 में उसने लहरों और तूफान को थामकर प्रकृति के ऊपर अपनी सामर्थ को दिखाया। यीशु मारा गया, दफ़नाया गया, और कब्र में से जी उठा (लूका 24:3)। यीशु के आश्चर्यकर्मों से आपको यह विश्वास हो जाना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

यीशु जो देता है: मसीहियत बड़ी सरल है और इसके प्रतिफल बहुत हैं। मसीहियत आपको इस संसार में जीने का ढंग सिखाती और अनन्तकाल में परमेश्वर के साथ ले जाती है। मसीहियत शांति और आशा से भरा गुण है। यीशु आपके जीवन में सचमुच की शांति देना चाहता है।

मत्ती 11:28 में हमें पता चलता है कि यीशु हमारे प्राणों के लिए आत्मिक विश्राम देने की पेशकश करता है। ''हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।''

यीशु में शांति और जीवन का उद्देश्य भी मिलता है। ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे'' (यूहन्ना 14:27)।

यीशु यहां पर जीवन का वास्तविक अर्थ और इसके बाद बहुतायत का जीवन देता है। ''चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है; मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ"

(यूहन्ना 10:10)।

यीशु के कारण, मृत्यु अंत नहीं है बल्कि यह आरम्भ है। यीशु ने उससे कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा'' (यूहन्ना 11:25)।

अपने जीवन के बारे में गम्भीरतापूर्वक विचार करें। क्या आप नये नियम के मसीह हैं? क्या आपने सुसमाचार की आज्ञा मानी है? क्या आप प्रभु के विश्वासी हैं? मसीही बनने के लिए आप यीशु में विश्वास लाये, अपने पापों से मन फिराए, यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले (मरकुस 16:15-16; प्रेरितों के काम 2:38)।

यीशु आपको बचाकर अपनी कलीसिया में मिला देगा। जो मसीही विश्वासी बने रहते हैं, उन्हें अनंतकाल के लिए बचा लिया जाएगा।

''यीशु बचाता है''

परमेश्वर के लिए दु:ख उठाना

(1 थिस्सलुनीकियों 2:14-16)

अर्ल डी. एडवर्डस

थिस्सलुनीकियों के मसीहियों को उनके परमेश्वर के प्रति समर्पण के कारण दु:ख उठाना पड़ा परन्तु वे अच्छे मन वाले लोग थे और सब कुछ सह लेते थे। 14 से 16 आयतों में यह पाया जाता है कि यदि कोई विरोधियों के क्षेत्रों में है तो उनके लिए परमेश्वर की सेवा करना कितना कठिन हो सकता है।

थिस्सलुनीके "परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदियां में मसीह यीशु में हैं, क्योंकि तुम ने भी अपने लोगों से वैसा ही दु:ख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था" (आयत 14)। पलिस्तीनी मसीहियों ने अविश्वासी यहूदियों के हाथों अत्यंत दु:ख उठाया (देखें प्रेरित 5:27-42; 8)। थिस्सलुनीके के मसीहियों ने भी अपने ही अन्य जाति स्वदेशी लोगों के हाथों दु:ख उठाया, लेकिन ऐसा यहूदियों के उकसाने के कारण हुआ (प्रेरित 17:1-10)।

पौलुस ने अविश्वासी यहूदियों की, जिन्होंने मसीहियों को सताया, की घोर निंदा की (आयतें 15, 16)। यद्यपि वह अपने संगी भाइयों से प्रेम करता था (रोमियों 9:1-4), फिर भी पौलुस ने कलीसिया को सताने के लिए उनकी निंदा की। उन्होंने रोमियों को उकसाया कि वे यीशु को क्रूस पर चढ़ाएं और इस प्रकार उन्होंने "यीशु मसीह को मार डाला," जबकि पिलातुस ने उसे किसी भी बात का दोषी नहीं पाया था (मत्ती 27:15-26; प्रेरित 2:22-24)। उनके नाम पुराने नियम के "भविष्यद्वक्ताओं को भी मार डालने" का दोष है (देखें मत्ती 23:29-32; लूका 11:47-51; प्रेरित 7:51, 52)। पौलुस ने लिखा है कि कलीसिया की स्थापना से पूर्व उन्होंने उसे जब वह थिस्सलुनीके में था तो "बाहर निकाला" (प्रेरित 17:1-9)। वे "सभी लोगों के विरोधी थे" दूसरों को

अन्यजातियों से बात नहीं करने देते थे ताकि उनका उद्धार न हो (देखें प्रेरित 13:42-45; 22:21, 22)।

उनके आचरण के कारण, वे "अपने पाप का घड़ा भर लेते हैं," या फिर जैसे किसी ने कहा है, "वे अपने पापों को ढेर बनाते हैं।" वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रहे थे और "उन पर परमेश्वर का भयानक प्रकोप आ पहुँआ है" (आयत 16)। परमेश्वर को उनके बलवा का संज्ञान है परंतु 16वीं आयत में "क्रोध" शब्द उनके प्रति परमेश्वर का दंड दर्शाता है (देखें प्रकाशितवाक्य 20:10)। पौलुस ने "आ पहुँआ है" भूतकाल में लिखा है, क्योंकि परमेश्वर का न्याय निस्संदेह पहले ही उन पर उदित हो चुका है। कालांतर में इतिहास यह दर्शाता है कि सन् 70 ईस्वी में यरूशलेम नाश किया जाएगा। परमेश्वर का न्याय उस समय उन पर आ चुका था। इससे भी बढ़कर अन्तिम न्याय के समय बलवा करने वालों के लिए बड़ा दण्ड ठहराया गया है!

क्या हम मसीह के कारण आज दु:ख उठाते हैं? कुछ देशों में मसीही लोग अपने विश्वास के लिए शारीरिक-यातना सहते हैं। अमेरीका में, शारीरिक यातना तो नहीं होती है लेकिन अन्य प्रकार का शोषण हो सकता है। अच्छे मन वाले लोगों को मज़बूत होना है जबकि वे मसीह के कारण दु:ख उठाते हैं।

सताव के बारे में सच (2:14-16)

जब पौलुस थिस्सलुनीकियों को छोड़ आया था तो उनका जीवन उथल-पुथल हो चुका था। जैसे ही वे अपने मसीही जीवन में स्थिर हो रहे थे तभी उन्हें अस्त व्यस्त करने वाली विरोधी हवा का सामना करना पड़ा। उनके जीवन में त्वरित सताव की आँधी चली। आत्मिक युवावस्था होने के कारण उन्होंने सताव का सामना वैसे नहीं किया जिस प्रकार पौलुस ने सामना किया था; लेकिन उन्होंने अपने दु:खों का ख्याल रखा। उनके बारे में पौलुस के टिप्पणी से हम उनके सतावट के समय की महत्वपूर्ण सच्चाईयों के बारे में पता लगा सकते हैं।

धार्मिकता अक्सर विरोध खड़ा करती है। पौलुस के समान थिस्सलुनीकियों ने भी भयानक और क्रूरतापूर्ण सताव का सामना किया। वे किसी को दु:ख नहीं पहुँचा रहे थे और न ही उपद्रव फैला रहे थे; वे वैसे जीवन यापन कर रहे थे जैसे परमेश्वर ने उन्हें जीने के लिए कहा था। उनके समर्पण से क्रोधित होकर, शैतान उनके पीछे लग गया।

सताव सह रहे लोगों के साथ हमेशा एक बड़ी भीड़ खड़ी हो जाती है। वे आरंभिक मसीहियों, भविष्यद्वक्ताओं, और स्वयं यीशु के साथ खड़े हुए। पौलुस ने बताया कि वे सताव के प्रति ठीक वैसे ही प्रतिक्रिया कर रहे थे जैसे यहूदिया के मसीही और विशेषकर यरूशलेम के मसीही विरोधियों का सामना कर रहे थे। उदाहरण के लिए, यरूशलेम की कलीसिया ने अपने ही लोगों के हाथों अति कष्ट उठाया था। यरूशलेम में ही यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, और भविष्यद्वक्ता भी मार डाले गए थे।

परमेश्वर हमें सताव सहने की ताकत देगा। उसने थिस्सलुनीकियों को संभाला और हमें भी संभालेगा। उनके विश्वासयोग्यता और उनके आस पास के क्षेत्रों से पौलुस भली भाँति परिचित था। *सताने वाले को इसका हिसाब देना होगा कि उसने क्या किया है।* जिस

व्यक्ति ने मसीहियों को सताया है उस पर परमेश्वर का क्रोध भड़केगा। उसका मसीहियों को सताने की सच्चाई यह है कि उसके अधर्म का प्याला भर गया है।

अगली बार जब आप परेशान किए जाते हैं या अपने पिता के प्रति विश्वासयोग्यता के लिए सताए जाते हैं तो यह स्मरण रखिए कि हमने इसे देखा है। धार्मिकता के कारण शैतान की ओर से विरोध किया जाना सामान्य बात है। यीशु ने कहा, "उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था" (मत्ती 5:12ब)। इसलिए, धार्मिकता के कारण सताव आना निश्चित है लेकिन हम इस पर भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमें सताव सहने की सामर्थ्य देगा और जो हमें सताते हैं उनका न्याय करेगा।

प्रचारकों का "आनंद" (2:17–20)

थिस्सलुनीके पौलुस के "आनंद" और "बड़ाई का मुकुट" हैं (आयत 19)। उसने उन्हें "भाई" कह के संबोधित किया और "बड़ी लालसा के साथ उनका मुँह देखने के लिये और भी अधिक यत्न किया" (आयत 17)। उनके प्रति माता–पिता जैसी ममता होने के कारण, पौलुस ने यह इच्छा प्रकट कि काश वह उनसे फिर मिल पाता (आयतें 7, 11, 17)।

वे उसके "आशा" थे। प्राथमिक रूप से मसीह पौलुस की आशा थी (1 तीमुथियुस 1:1); लेकिन दूसरे शब्दों में थिस्सलुनीकियों ने न्याय के दृष्टिकोण से उसके लिए आशा उत्पन्न किया, "हमारे प्रभु यीशु के सम्मुख उसके आने के समय" (आयत 19)। वे (परमेश्वर के छुड़ाए हुए लोग) पौलुस के लिए प्रमाण है कि वह प्रभु के लिए अपने वरदानों का प्रयोग कर रहे थे (मत्ती 25:14–30)।

वे उसके "आनंद" का कारण थे। पौलुस यह जानकर बड़ा आनंदित हुआ कि उन तक मसीह द्वारा प्रतिज्ञा की गई भरपूर जीवन लाने का वह एक भाग बना। (यूहन्ना 10:10)। यूहन्ना ने अपनी तीसरी पत्री में लिखा, "मुझे इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे बच्चे सत्य पर चलते हैं" (3 यूहन्ना 4)।

वे उसके "बड़ाई का मुकुट" थे। वे उसके सेवा के "मुकुट" होंगे। पौलुस ने ओलिंपिक के प्रतिभागी का उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसने अपने लोगों के लिए प्रतिस्पर्धा में पदक जीता है। यह विजेता जब घर लौटेगा तो वह अपने राजा को सम्मानित करने के लिए वह पदक उन्हें भेंट करेगा ताकि उसके देश का सम्मान हो सके। यह उसके "बड़ाई का मुकुट" है।

थिस्सलुनीकियों ने पौलुस को अत्यधिक आनंदित किया और हमें उनको भी आनंद पहुँचाना है जिन्होंने हमें सुनाया है। हमें "अच्छे मन" वाले लोग होना है कि हम उस संदेश के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें जिसे हमने सुना है।

मसीह में हमारा संबंध (2:17–20)

पौलुस ने थिस्सलुनीके में अपने भाइयों से स्नेह किया। कुछ महीने पूर्व इस कलीसिया की आधारशिला रखने के बाद, उस कलीसिया के हर एक सदस्य उसके मन

के प्रिय हो गए थे। जैसे उसने थिस्सलुनीकियों को उनसे मिलने की अपनी इच्छा स्मरण दिलाई कि वह उनसे भेंट करना चाहता है तो हम उसके शब्दों में एक अद्वितीय संबंध पाते हैं कि किस प्रकार एक मसीही अपने संगी मसीहियों के साथ संगति करने में आनंद की अनुभूति करता है।

मसीही एक साथ संगति करने के लिए उत्साहित रहते हैं। पौलुस भाइयों को निरंतर स्मरण करता है। यद्यपि शारीरिक रूप से तो वह उनसे दूर है लेकिन उसकी आत्मा में वे बने हुए हैं। एक दूसरे के साथ शारीरिक अलगाव दुःख का कारण हुआ। पौलुस ने यहाँ (अपोर्फानिजो) शब्द का प्रयोग किया है जिसका तात्पर्य "अलग होना" या "अनाथ" होना है। जब पौलुस को उनसे किसी कारणवश हटाया गया तो उसके हृदय ने ऐसी प्रतिक्रिया की मानो जैसे किसी बच्चे को उसके माता-पिता से अलग कर दिया गया हो।

पौलुस बार-बार आकर उनको देखना चाहता था परंतु शैतान ने उसके रास्ते में बाधा डाली। यहाँ, संभवतः पौलुस यहूदी विरोधियों के बारे में कह रहा होगा जिन्होंने उसे उनके पास जाने से रोका या फिर वह किसी अन्य बाधा के बारे में लिख रहा होगा। एक बात तो निश्चित है: कोई भी बात जिसने परमेश्वर के संदेशवाहकों को राज्य का कार्य करने से रोका, उसको शैतान का कार्य ही कहा जा सकता है (लूका 22:3; प्रेरित 5:3)।

एक मसीही को दूसरे मसीही के संगति के द्वारा अत्यधिक आनंद मिलता है। थिस्सलुनीके पौलुस के आनंद, आशा और मुकुट का कारण थे। उसने मसीह से उनकी भेंट कराई, और उन्हें विश्वास में बच्चों के समान देखा। वह उनके लिए जीया, उनमें बड़ा आनंद पाया और उनके विश्वासयोग्यता को अपने जीवन का मुकुट समझा।

थिस्सलुनीके पौलुस के वैसे ही थे जैसे माता-पिता के लिए उनके बच्चे। सबसे बढ़कर वह यह देखना चाहता था वे उद्धार पाएं और महिमा में उनका स्वागत हो। हम भी, सबसे बढ़कर, यही देखना चाहते हैं कि हमारे बच्चे यीशु के लिए तैयार हों और उसके आने की प्रतीक्षा करें।

हम एक दूसरे को प्रभु के आगमन के लिए तैयार कर रहे हैं। पौलुस की हार्दिक इच्छा यह थी कि थिस्सलुनीके, प्रभु के आगमन पर उसके विश्वासयोग्य के रूप में उसके द्वारा ग्रहण किए जाएं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उसके और इन भाइयों के मध्य व्यक्ति संबंध संसार के अन्य संबंधों से अधिक घनिष्ठ था। जब हम उनके संबंधों के बारे में सोचते हैं तो हमारा ध्यान यीशु के बारे में मत्ती के इन शब्दों की ओर जाता है, "अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं!" (मत्ती 12:49)। वह अपने थिस्सलुनीके भाइयों एवं बहनों को प्रभु के लौटने के समय तैयार पाए जाने के लिए कुछ भी सहायता प्रदान करने के लिए हर संभव तैयार था।

यह बड़ा ही अद्भुत है कि दूसरों की चिंता पौलुस के समान की जाए। मसीही होने का तात्पर्य यह है कि आप अन्य मसीहियों की चिंता करें और अन्य मसीही आपकी चिंता करें। कलीसिया में हमारे अन्य भाइयों के साथ संबंध ही हमारा सबसे बड़ा पारिवारिक संबंध है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर है

जैरी बेट्स

पिछले पाठ में मैंने यह दिखाते हुए कि यीशु परमेश्वर है, इस प्रमाण की चर्चा की थी और अब यही बात मैं पवित्र आत्मा के सम्बन्ध में करूंगा। यह अध्ययन यीशु से सम्बन्धित अध्ययन से अधिक कठिन है। उसके काम को तय कर पाना अधिक कठिन है और उसके काम के सम्बन्ध में कई दुरुपयोग पाए जाते हैं। बहुत से लोग इस युग को पवित्र आत्मा के युग के रूप में देखते हैं। इस प्रकार ऐसा लगता है कि पवित्र आत्मा को कई बार यीशु से और पिता परमेश्वर से भी ऊंचा कर दिया जाता है। बेशक आत्मा के सम्बन्ध में बाइबल की शिक्षा का यह एक दुरुपयोग होगा।

पवित्र आत्मा व्यक्ति है

पवित्र आत्मा में व्यक्तित्व वाली खूबियां हैं (यूहन्ना 14:26; 15:26; 16:13-14)। इन वचनों में यीशु ने नौ बार पवित्र आत्मा को व्यक्ति बताया।

वह बात करता है और दूसरों को बात करने की सामर्थ देता है: ''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे'' (1 तीमुथियुस 4:1)।

वह सिखाता है: ''परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा'' (यूहन्ना 14:26)।

वह अगुआई करता है: ''परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा'' (यूहन्ना 16:13)।

उसका दिमाग है: ''और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मंसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है'' (रोमियों 8:27)।

वह लगाव रखता है: ''हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर मैं तुम से विनती करता हूं, कि मेरे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो'' (रोमियों 15:30)।

वह इच्छा रखता है: ''परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है'' (1 कुरिन्थियों 12:11)।

वह उदास हो सकता है: ''और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोक्ति मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है'' (इफिसियों 4:30)।

पवित्र आत्मा खुदा है

पवित्र आत्मा के परमेश्वर होने की स्पष्ट घोषणाओं में से एक प्रेरितों 5:3-4 में

देखी जा सकती है। प्रेरितों 5 में हम हनन्याह और सफीरा को कुछ सम्पत्ति बेचकर उससे प्राप्त धन निर्धनों की सहायता के लिए प्रेरितों के पास लाने को देखते हैं। परन्तु उन्होंने प्रेरितों से यह कहकर झूठ बोला था कि जितना उन्होंने कलीसिया को दिया था इतने में ही उन्होंने अपनी सम्पत्ति बेची थी। आयत 3 में हम पतरस को हनन्याह से यह कहते हुए देखते हैं, ''हे हनन्याह शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले।'' फिर आयत 4 के अंत में हमें पतरस की यह बात मिलती है, ''तू मनुष्यों से नही बल्कि परमेश्वर से झूठ बोला है।'' परमेश्वर की प्रेरणा से पतरस ने ध्यान दिलाया कि यही झूठ परमेश्वर के साथ-साथ पवित्र आत्मा के साथ भी बोला गया। इसका मतलब यह हुआ कि आत्मा और पिता परमेश्वर बराबर हैं।

व्यवस्थाविवरण 32:12 में हम देखते हैं कि यहोवा परमेश्वर जंगल में ''अकेला'' इस्राएलियों की अगुआई करता था, परन्तु यशायाह 63:10 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएलियों ने पवित्र आत्मा के विरुद्ध बगावत करके उसे खेदित किया था। यह विरोधाभास नहीं है बल्कि पवित्र आत्मा भी परमेश्वर है। पिता परमेश्वर, यीशु, और आत्मा सब इस्राएलियों की अगुआई में शामिल थे। ऐसी ही एक परिस्थिति यशायाह 40:13 और रोमियों 11:34 में देखी जा सकती है। यशायाह 40 में यशायाह पूछता है कि आत्मा को किसने सिखाया या सलाह दी। रोमियों 11 में पौलुस इसी आयत को लेकर इसे परमेश्वर पिता के लिए इस्तेमाल करता है, यहां फिर यह पता चलता है कि दोनों बराबर हैं।

आत्मा में खुदा की खूबियां हैं

इब्रानियों 9:14 में आत्मा को सनातन आत्मा कहा गया है। आत्मा को सर्वव्यापी भी कहा गया है।। कुरिन्थियों 6:19 में पौलुस पूछता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?'' आत्मा का वास हर मसीही के हृदय में बताया गया है। मसीही लोग संसार भर में फैले हुए हैं इसलिए जब तक आत्मा खुदा न हो तब तक ऐसा होना सम्भव नहीं है कि वह हर जगह एक ही समय हो। दाऊद ने इस बात को समझा कि पवित्र आत्मा से भाग पाना असम्भव है (भजन संहिता 139:7)। इसके अलावा आत्मा को अंतरयामी (सब कुछ जानने वाला) कहा गया है। 1 कुरिन्थियों 2:10 पर ध्यान दें: ''परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।'' आत्मा को परमेश्वर की गूढ़ बातें जानने वाला भी बताया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह भी परमेश्वर है। मीका इस बात की घोषणा करता है कि वह ''यहोवा की आत्मा से शक्ति, न्याय, और पराक्रम पाकर परिपूर्ण'' था (मीका 3:8)।

आत्मा स्वयं काम करता हैं

''आत्मा को सृष्टि की रचना में योगदान डालते दिखाया गया है। भजन लिखने वाले ने भजन 33:6 में लिखा है, ''आकाशमण्डल यहोवा के वचन से और उसके सारे गण

उसके मुँह की श्वास से बने।'' श्वास यहां आत्मा को ही कहा गया होगा। ऐसा ही भजन 104:30 में मिलता है, ''तू अपनी ओर से सांस भेजता है और वे सृजे जाते हैं और तू धरती को नया कर देता है।'' आत्मा ने न केवल सृष्टि की रचना में अपना योगदान दिया बल्कि पृथ्वी को बरकरार भी रखता है, और नया भी करता है।

यूहन्ना घोषणा करता है, ''आत्मा तो जीवनदायक है'' (यूहन्ना 6:63)। जीवन देने की सामर्थ तो केवल परमेश्वर में है। और यहां हमें यीशु के वचन यह कहते हुए मिलते हैं कि आत्मा जीवन दे सकता है; जिसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा परमेश्वर है। 1 पतरस 3:18 में पतरस मसीह के दुख सहने और ऊंचा किए जाने की बात कर रहा है। वह कहता है कि यीशु ने दुख उठाए ताकि मनुष्यजाति परमेश्वर के निकट आ सके। वह शारीरिक रूप में तो मर गया परन्तु ''आत्मा के भाव से जिलाया गया।'' रोमियों 8:11 में पौलुस कहता है कि आत्मा ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया और वह हमें भी जिलाएगा।

पवित्र आत्मा के खुदा होने का एक और प्रमाण यीशु का देहधारी होना है। मत्ती और लूका दोनों पुस्तकों में यह घोषणा की गई है कि यीशु पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मा या गर्भ में आया (मत्ती 1:20; लूका 1:35)। कोई उसी का पुत्र होता है जिससे जन्मा हो; इसका अर्थ यह हुआ कि हम कह सकते हैं कि यीशु पवित्र आत्मा का पुत्र है परन्तु कई जगहों में यीशु को परमेश्वर का पुत्र भी कहा गया है। जिसका अर्थ यह हुआ कि पवित्र आत्मा भी परमेश्वर है। यह परमेश्वर के एक होने की शिक्षा की पुष्टि भी है, जिसे हम अगले पाठ में देखेंगे। यदि तीनों एक नहीं हैं, तो क्या यीशु के दो पिता हुए?

पवित्र आत्मा की आराधना

2 कुरिन्थियों 13:14 में हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा को पवित्र माने जाने वाले परमेश्वरत्व का भाग बताया गया है। ''प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।'' परमेश्वर को छोड़ किसी भी अन्य नाम को इस्तेमाल करना तीनों का अनादर करना होगा। ऐसी ही एक बात मत्ती 28:19 में यीशु के ग्रेट कमीशन में मिलती है, ''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।'' किसी के नाम में बपतिस्मा देने का अर्थ उसके अधिकार से करने का अर्थ होता है। पौलुस ने किसी को अपने नाम में बपतिस्मा देने की अनुमति नहीं दी। (1 कुरिन्थियों 1:13)। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु के साथ-साथ आत्मा को वही आदर और आराधना मिलती है, जो पिता परमेश्वर को मिलती है।

सारांश

इस चर्चा से उम्मीद है कि यह समझ में आ सकता है कि पवित्र आत्मा को परमेश्वर बताया गया है और उसमें परमेश्वर के वही गुण हैं जो पिता परमेश्वर और यीशु में हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा भी परमेश्वर है।